4. पशुपालन

सैक्टर एक दृष्टि में

वार्षिक योजना वर्ष 2014–2015 में योजना हेतु प्रस्तावित राशि

- आयोजना बजट सीलिंग राशि 798.61 लाख
- राज्य आयोजना मद 738.62 लाख
- केन्द्रीय योजना मद 59.99 लाख

लक्ष्य एवं उदेश्य

- पशुधन अनुपात को बढाकर प्रति 100 व्यक्तियों पर 85 पशु करना
- दुग्ध उत्पादक पशुओं के प्रतिशत को बढाकर 24 प्रतिशत करना
- वार्षिक दूग्ध उत्पादन बढाना
- ऊन उत्पादन बढाना
- अण्डा उत्पादन बढाना
- भवन विहिन पशु चिकित्सालयों/औषधालय हेतु भवन निर्माण करवाना
- पशु चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार करना

i'kqikyu foHkkx dk nf"V i=

भारत वर्ष कृषि प्रधान देश है, इसी अनुरूप हमारा राज्य एवं जिला भी कृषि प्रधान है। कृषि एवं पशुपालन एक दूसरे के पूरक है। राज्य की अर्थव्यवस्था में पशुधन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि के साथ–साथ पशुपालन है। वर्षा एवं पानी की कमी के कारण पशुधन ही आय का मुख्य स्रोत रहा है। यहां का नागौरी गौ–वंश अपनी विशिष्ठ सुन्दरता, विपरित परिस्थितियों में भी अधिकतम कार्य–कुशलता के कारण पूरे भारत में अपनी विशेष पहचान रखता है। नागौरी बैल के नाम से ही नागौर जिले की विशेष पहचान है। नागौर गौ–वंश की विषिष्ठता व मांग के कारण ही नागौर जिले में वर्ष भर में तीन राज्य स्तरीय एवं 16 अन्य विभिन्न पशु मेले सम्पन्न होते हैं, जो राज्य में किसी एक जिले में सर्वाधिक है। अतः यदि इस जिले को पशु प्रधान जिला कहा जाय तो कोई अतिषयोक्ति नहीं होगी। जिले में वर्षा की कमी, वातावरण की प्रतिकूलता के बावजूद भी प्रकृति ने इस जिले में वृक्षों में खेजड़ी जिसे मरूस्थल का कल्पवृक्ष कहना उचित होगा तथा बैर झाड़ी की प्रचुरता है जिसमें अधिकतम प्रोटीन व सन्तुलित आहार होने के कारण हमारा पशुधन विपरित परिस्थितियों में भी देश में अपनी विशिष्ठ स्थान रखता है।

वर्ष 2003 की पशु गणना के अनुसार जिले करीब 26.45 लाख पशु उपलब्ध हैं। पशुधन की बहुतायतता को ध्यान में रखते हुए पशु नस्ल सुधार कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। कृत्रिम गर्भाधान द्वारा शंकर नस्ल के कार्यक्रमों की बढ़ावा दिया जाना चाहिये। वर्तमान में गांवों में पशु चिकित्सालयों का अभाव–सा हैं। सरकार को चाहिए कि पशुपालन को बढ़ावा देने के गांवों में पशु चिकित्सालय खोलें एवं चल पशु चिकित्सा वाहनों की संख्या में वृद्धि की जाकर दूर–दराज के पशुपालकों को पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाना भी वांछनीय हैं। उन्नत दुधारू पशुओं के वितरण के साथ दुग्ध के विपणन, दुग्ध भागों का निर्माण एवं दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों के गठन पर अधिक बल दिया जाना चाहिये। मूर्गी–पालन, बकरी–पालन, भेड़–पालन कार्यक्रमों को महत्व दिया जाना चाहिये। उन उत्पादकों को बिचौलियों से बचाने हेतु सहकारिता के माध्यम से जल संग्रहण एवं विपणन कार्यक्रम प्रारंभ करने पर भी विचार किया जाना चाहिये।

जिले में पशुधन बहुतायत में पाया जाता है, यहां के किसान काफी पशु रखते हैं। यहां विशेष तौर से नागौरी नस्ल के गाय व बैल पाये जाते हैं।

4-1 jkT; lpdkdk dh rqyuk e ftyk dh fLFkfr

क्र.सं.	संकेतांक	जिला स्तर	राज्य स्तर
1	वर्ष 2003 की पशुगणना के अनुसार कुल पशुधन (संख्या लाखों में)	27.48	491.40
2	वर्ष 1997 एवं 2003 की पशु गणना में वृद्धि अथवा कमी का प्रतिशत	-10.56	-10.10
3	पशुधन का घनत्व (प्रति वर्ग किमी)	155	144
4	प्रति 100 व्यक्तियों पर पशुधन अनुपात	73.98	87
5	वार्षिक दुग्ध उत्पादन (लाख टन)	5.18	83.10
6	कुल पशुधन में से दुग्ध उत्पादक पशुओं का प्रतिशत	21.38	19.20
7	ऊन उत्पादन (क्विंटल में)	2503	150490
8	अण्डा उत्पादन (संख्या लाखों में)	32	69326

4-2 fty e miyC/k i'k/ku ,o i'k fpfdRlk lLFkkvk dk ipk;r lfefrokj fooj.k

क्र. सं.	पंचायत समिति	उपलब्ध पशु धन (2003 पशु गणना अनुसार)	जिले में उपलब्ध पशु चिकित्सा सुविधाएं			
			पशु रोग निदान ईकाई	प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय	पशु चिकित्सालय	पशु स्वास्थ्य उप केन्द्र
1.	नागौर	363499	1	1	6	12
2.	मेड़तासिटी	253360	0	1	5	4
3.	मुण्डवा	361747	0	1	9	7
4.	जायल	254579	0	1	4	5
5.	डेगाना	247846	0	1	7	5
6.	रियाबड़ी	239196	0	0	7	2
7.	लाडनूं	219521	0	1	6	3
8.	कुचामनसिटी	417772	1	1	12	11
9.	डीडवाना	364255	0	1	7	15
10.	मकराना	222450	0	1	5	6
11.	परबतसर	285401	0	1	5	9
योग		3229626	2	10	73	79

4-3 i'k x.kuk o"k 2003 d vulkj fty e uLyokj i'k/ku dk ipk;r lfefrokj fooj.k

क्र.स.	पंचायत समिति	गाय	भैंस	भेड़	बकरी	अन्य	योग
1	नागौर	47012	30144	62202	209940	14201	**363499**
2	मेड़ता	36497	43114	80001	80832	12916	**253360**
3	मुण्डवा	48041	47188	113169	143409	9940	**361747**
4	जायल	35416	37010	55538	117855	8760	**254579**
5	डेगाना	35618	42857	66301	87719	15351	**247846**
6	रियाबड़ी	30293	45168	61605	88235	13895	**239196**
7	लाडनूं	29221	22093	35435	129997	2775	**219521**
8	कुचामन	51095	66613	129437	156846	13781	**417772**
9	डीडवाना	43668	52353	66438	188518	13278	**364255**
10	मकराना	29954	35135	47278	104267	5816	**222450**
11	परबतसर	31338	37751	74651	129469	12192	**285401**
योग		**418153**	**459426**	**792055**	**1437087**	**122905**	**3229626**

4-4 i'k/ku fiNM gku d dkj.k

- कृषि प्रधान जिला होने के कारण पशुधन को मुख्य व्यवसाय न मानकर सहायक व्यवसाय के रूप में लिया जाना
- पशु चिकित्सा सुविधाओं का आवश्यकतानुसार विस्तार नहीं होना
- स्थाई चारागाह भूमि का अभाव होना
- जिले में पीने योग्य पानी की कमी एवं उपलब्ध पानी में फ्लोराईड की अत्यधिक मात्रा का होना

- जिले में अधिकांशतः अकाल की स्थिति रहना
- कृषकों एवं पशुपालकों की अज्ञानता के कारण पशुपालन की परम्परागत पद्धति एवं पशुओं के साथ भावनात्मक सम्बन्धों का होना

4-5 ftyk okf"kd ;ktuk d y{;

- पशुधन अनुपात को बढाकर प्रति 100 व्यक्तियों पर 85 पशु करना
- दुग्ध उत्पादक पशुओं के प्रतिशत को बढाकर 24 प्रतिशत करना
- वार्षिक दूग्ध उत्पादन बढाकर 7.00 लाख टन प्रतिवर्ष करना
- ऊन उत्पादन में बढाकर 3000 टन करना
- अण्डा उत्पादन को बढाकर 35 लाख प्रतिवर्ष करना
- भवन विहिन पशु चिकित्सालयों/औषधालय हेतु भवन निर्माण करवाना
- पशु चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार करना

4-6 y{;k rd igpu dh dk;&;ktuk

- **fpfdRlk lfo/kkvk e foLrkj&**

  वर्तमान में जिले में पशुपालन विभाग की सुविधाएं आवश्यकता के अनुरूप नहीं है। वर्तमान में जिले में 2 जिला पशु रोग निदान इकाई, 10 प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय, 61 पशु चिकित्सालय, 12 पशु औषधालय एवं 73 पशु उपकेन्द्र कार्यरत है। विभाग अभी दूरस्थ गावों तक पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं करवा पा रहा है। जिले की 11 पंचायत समितियों एवं 461 ग्राम पंचायतों के मध्यनजर पशु चिकित्सा सुविधा की उपरोक्त संस्थाएं कम है।

- **Vhdkdj.k e of)dj i'k dk jkxk rFkk i'kvk dh eR;&nj e deh djuk**

  वर्तमान में जिले में संक्रामक रोगों से बचाव हेतु 515000 का पशुओं का टीकाकरण किया जाता है। जिसको विभागीय प्रयासों से बढाकर 654000 टीके लगाया जाना प्रस्तावित है। जिससे पशुओं में मृत्यु–दर की विशेष रूप से कमी होगी तथा पशुओं की उत्पादन शक्ति में बढावा होगा। टीकाकरण के प्रति आमजन में जागरूकता उत्पन्न करने हेतु एवं विभागीय गतिविधियों में पारदर्शिता लाने हेतु स्वंय सहायता समूहों, ग्राम सेवा सहकारी समितियों के सदस्यों एवं ग्राम स्तरीय जन प्रतिनिधियों का सहयोग लिया जावेगा।

- **uLy l/kkj ,o i'k lo/ku dk;Øe**

  विभाग द्वारा सम्पूर्ण जिले को नस्ल सुधार कार्यक्रम में आगामी पांच वर्ष में जोड़ा जायेगा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम से अच्छी नस्ल के देशी एवं संकर नस्ल के पशुओं को तैयार किया जावेगा जिससे पशुओं की दुग्ध उत्पादन शक्ति में बढावा होगा। वर्तमान में कृत्रिम गर्भाधान के 85000 के लक्ष्यों बढाकर 90000 किया जावेगा। नस्ल सुधार हेतु प्रत्येक ग्राम पंचायत को अच्छी नस्ल के सॉड उपलब्ध करवाकर उनसे भविष्य में अच्छी नस्ल के सॉड पंचायत स्तर पर तैयार किये जावेंगे।

- **vkokjk i'kvk dh of) dk jkduk**

  जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में आवारा पशुओं (विशेषतः सांडो) की आम समस्या है। अतः इसके समाधान जिले में आवारा पशुओं की वृद्धि रोकने हेतु नकारा नर पशुओं का बधियाकरण एक अभियान चलाकर किया जावेगा।

- **k> fuokj.k dEik dk vk;ktu**

वर्तमान में 1600 प्रतिवर्ष बाँझ निवारण शिविर के लक्ष्य को 2200 प्रति वर्ष किया जावेगा। इससे गाय–भैंस में प्रजनन संबंधी बीमारियों की मौके पर ही जांच कर औषधियां दिये जाने में जिले में नकारा पशुओं में कमी होगी तथा दुग्ध उत्पादन में बढोतरी होगी।

- if'k{k.k dk;Øek dk vk;ktu

विभिन्न विभागीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं विभागीय योजनाओं की जानकारी के माध्यम से पशुपालकों को पशुपालन की नवीनतम तकनीको से अवगत करवाया जावेगा। पशु प्रबंधन में प्रशिक्षित व्यक्तियों तथा अच्छे दुधारू पशुओं का पंजीकरण किया जावेगा।

- HkM chek ,o dke/ku chek ;ktuk

वर्तमान में भेड़ बीमा एवं कामधेनू बीमा योजना के लक्ष्यों में बढोतरी कर पशुपालकों को पशुओं की होने वाली असामयिक मृत्यु पर मुआवजा राशि से लाभांवित किया जायेगा ताकि आर्थिक दृष्टि के कमजोर पशुपालक पुनः पशु क्रय कर अपना पशुपालन व्यवसाय को चला सके।

- cdjh ikyu dk;Øe

जिले में बकरियों के नस्ल सुधार हेतु उन्नत नस्ल (बीजू बकरे – सिरोही नस्ल) के बकरों का वितरण किया जाता है, उक्त योजना वर्तमान में जिले के पांच पंचायत समिति क्षेत्रों (लाडनूॅ, डीडवाना, कुचामन, परबतसर एवं मकराना) में लागू है, का विस्तार कर जिले में बकरी पालन क्षेत्र में बढोतरी की जायेगी।

- o"kHk ikyu dUn e i'kvk dk j[k&j[kko

जिले में गांयों में नस्ल सुधार हेतु नागौरी नस्ल के बछड़े एवं भैंस नस्ल सुधार हेतु मुर्रा नस्ल (हरियाणा) के पाडे कम उम्र में क्रय किये जाकर उनका पालन–पोषण किया जाता है तथा प्रजनन योग्य होने पर पशुपालकों को वितरित किये जाते हैं। वर्तमान में क्रय किये जाने वाले नागौरी नस्ल के बछड़े एवं मुर्रा नस्ल के पाडे की संख्या में बढोतरी की जाकर अधिक क्षेत्र में पशु नस्ल में सुधार के प्रयास किये जायेंगें।

- fty e i'kikyu dk c<kok nu gr i'k fe= Dyc dh LFkkiuk

विभाग द्वारा तहसील स्तर पर एक पशु मित्र क्लब की स्थापना की जाकर प्रगतिशील पशुपालक, महिलाओं व युवाओं की भागीदारी बढाई जायेगी। पशु मित्र क्लब के उद्देश्य निम्नानुसार रहेगें:–

☞ विभाग द्वारा सदस्यों को विभागीय योजनाओं की पूर्ण जानकारी एवं उनके प्रचार प्रसार का प्रशिक्षण दिया जावेगा।

☞ विभाग द्वारा सदस्यों से क्लब के क्षेत्र की आवश्यकताओं तथा सुविधाओं की मांग ली जावेगी तथा क्लब के सदस्यों से मिलकर योजना बनाकर उनकी पूर्ति के प्रयास किये जावेंगे।

☞ विभाग द्वारा क्षेत्र में समय–समय पर लगाये जाने वाले टीकाकरण, चिकित्सा शिविर एवं बाँझ निवारण शिविरों में क्लबों का सहयोग लिया जावेगा।

☞ क्लब द्वारा जन सहयोग से किये जाने वाले कार्यों में क्षेत्रीय लोगों को सहभागिता हेतु तैयार किया जावेगा।

☞ क्लब के सदस्यों की प्रत्येक तिमाही में बैठक कर विभागीय अधिकारियों को विभिन्न योजनाओं की प्रगति का फीडबैक देना एवं भविष्य के कार्यक्रम की रूपरेखा बनाना।

☞ विभिन्न क्लबों द्वारा अपने क्षेत्र में सैमिनार व गोष्ठियों का आयोजना कर अपने अनुभवों से एक दूसरे को जानकारी देना तथा लोगों को जागरूक करना।

- fofHkUu foHkkxk l leUo; LFkkfir dj i'kqikydk dk fofHkUu ;kstukvk l ykHkfUor djuk

☞ पशुपालन एवं कृषि विभाग संयुक्त रूप से ग्रामीण क्षेत्र में पशुपालकों व किसानों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेंगे। जिसमें चारे की फसलों को उगाना, कम्बाईन के प्रयोग व सुखे चारे को जलाकर नष्ट करने की प्रथा को बंद करना, वर्मी कम्पोस्ट का इस्तेमाल एवं उत्पादन को बढावा देना आदि कार्यों हेतु लोगों को जागरूक किया जावेगा।

☞ पंचायती राज विभाग की संस्थाओं एवं ग्राम पंचायतों के सहयोग से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को विभागीय योजनाओं एवं पशुपालन के महत्व की जानकारी उपलब्ध करवाई जा सकती है। बधियाकरण, नस्ल सुधार, अच्छी नस्ल के साँड तैयार करना, गौचर भूमि की सार संभाल आदि कार्यों हेतु सम्बन्धित ग्राम पंचायत की भूमिका अति आवश्यक रहती है।

☞ क्षेत्र में भेड़ पालन, बकरीपालन क्षेत्र में असीम संभवाननएं हैं परन्तु यह क्षेत्र संगठित नहीं है जिससे ऊन व मीट उत्पादन का आवश्यक मूल्य पशुपालकों को नहीं मिल पाता। सहकारी विभाग के माध्यम से समितियों का गठन कर इन पशुपालकों को लाभान्वित किया जा सकता है। बैंकिंग क्षेत्र की विभिन्न वित्तीय संस्थाओं की सहायता से ऋण आदि उपलब्ध करवा कर इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये जावेंगे।

☞ पशुपालन एवं डेयरी विभाग आपसी तालमेल से क्षेत्र में नई दुग्ध समितियों का गठन किया जा सकता है। उनको अच्छी नस्ल के साँड, तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाई जा सकती है। दोनों विभागों का एक जैसा कार्यक्षेत्र होने के कारण आपसी संसाधनों का उपयोग कर एक दूसरे को लाभान्वित किया जा सकता है।